आइये जानिए अपने रसोईघर को

UNDER MOBILE LEARNING RESOURCE CENTER PROJECT

Innovative Educational Engagement for Children

यूनिसेफ एवं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना के सहयोग से
रोहिणी साइंस क्लब द्वारा संचालित प्रोजेक्ट के तहत् विकसित

COVID-19 कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के कारण मार्च 2020 से स्कूल बंद हैं। इस दौरान बच्चे घर पर हैं और इनकी पढ़ाई का ख्याल रखते हुए सरकार ने डिजिटल कंटेंट तैयार कर दूरदर्शन के माध्यम से लगातार प्रसारित करने की कोशिश की है। इस दौरान WhatsApp जैसे सोशल मिडिया प्लेटफार्म का भी बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रयोग में लाया गया।

इस दिशा में किये गए प्रारंभिक प्रयासों ने कुछ उम्मीद बांधी है। इससे बच्चों में "सीखने" के प्रति दिलचस्पी बढ़ी है जो उनके ज्ञानवर्धन में भविष्य में सहायक भी हो सकता है। इस क्रम में एक नई सम्भावना जो दिख रही है वह है "थीम बेस्ड लर्निंग" अर्थात "घर पर रहकर सीखना"। हम सभी जानते है कि बच्चे घर पर हो या स्कूल में, वे हमेशा कुछ न कुछ सीखते जरुर हैं। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से घर की सम्पूर्ण गतिविधियों को देख रहे हैं – उनके लिए "घर" कुछ नया सीखने के लिए बेशुमार अवसर देता है। इसी विषयवस्तु को लेकर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है जिसके अंतर्गत दस थीम (विषयवस्तु) का चयन किया गया है जिसके सम्बन्ध में विस्तार से अलग–अलग थीम पुस्तिकाओं में आप शैक्षिक सामग्री देख सकेंगे।

हमारी कुछ भ्रांतियाँ भी है जिसे स्पष्ट करना जरूरी है।

➡ COVID में स्कूल बंद है तो क्या बच्चों का 'सीखना' भी बंद है? जी नहीं। बच्चे घर पर रहकर भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

➡ घर पर किताब–कॉपी लेकर बच्चे नहीं बैठे हैं इसलिए 'सीखना' संभव नहीं है। यह बात भी सही नहीं है। सीखने के लिए हमेशा किताब व् कॉपी को होना जरूरी नहीं है।

➡ खेलते बच्चे, सिर्फ खेलते हैं, सीखते कुछ नहीं, यह भी बात सही नहीं है। खेलते हुए भी बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं जो उनके जीवन में काम आता है, जैसे – टीम भावना से खेलना, हार को स्वीकार करना, चुनौती लेना आदि।

➡ गीत गाते, नाचते–कूदते, दौड़–भाग करते, बच्चे कुछ सीखते नहीं हैं, यह बात भी सही नहीं है। खेलने–कूदने से बच्चों में शारीरिक चपलता और स्फूर्ति पैदा होती है जो तंदरुस्त और खुशमिजाजी बने रहने में सहायक होता है।

इसलिए कहा जाता है – सीखना एक जन्मजात प्रवृति है। हम कहीं भी रहकर सीख सकते हैं। हर परिस्थिति से कुछ सीख सकते हैं। हाँ, स्कूली पाठ्यक्रम से इसका कितना अंश जुड़ा है यह तय करने की हमें जरूरत है।

10. रसोईघर की चीजों के नाम निम्न कॉलम में लिखें–

बरतन			
प्लास्टिक की चीजें			
अनाज			
सब्जी कच्ची खायी जानेवाली			
सब्जी पकाकर खायी जानेवाली			
बेकार की चीजें			

11. इन्हें पकाने में किन–किन चीजों की आवश्यकता पड़ेगी।

खिचड़ी	
पकौड़ी	
खीर	
बिरयानी	
आलूदम	

बातचीत - लकड़ी/कोयला चूल्हा एवं गैस चूल्हा के क्या-क्या लाभ और हानि है?

थीम बेस्ड लर्निंग

'थीम बेस्ड लर्निंग' के अंतर्गत हम यहाँ उन विषयों को ले रहे हैं जो हमारे घर और दैनिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। इसके माध्यम से बच्चों को उनकी रचनात्मकता और विचारों का बेहतर उपयोग करने का अवसर मिलता है। बच्चों में इस दौरान चीजों को एक नई दृष्टि से देखने, उसमें नवीनता की खोज करने, उनको मूर्त रूप देने, डिजाइन करने के साथ–साथ उससे सम्बंधित सामग्री को पढ़ने व उस विषय पर लिखने जैसी एक नई प्रवृति के पनपने की भी सम्भावना है। आगे चलकर इस सीख को बच्चे अपने समुदाय व स्कूल में प्रस्तुत भी कर सकेंगे। हम अपने घर की सभी गतिविधियों को अगर गौर से देखे तो पाएंगे कि उसमें ढ़ेर सारी सीखने की सम्भावना है। जो बच्चे घर पर रहकर इन दिनों करीब से यह सब कुछ देख रहे हैं, बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं एवं अपने परिवारजनों को मदद भी कर रहे हैं– उनके लिए "घर" सीखने के बेशुमार अवसर देता है। घर की गतिविधियों पर अगर हम एक नजर डालते हैं तो देखते हैं कि वहाँ – भोजन की व्यवस्था, साफ–सफाई, नहाना–धोना, कपडे साफ करना, छोटे बच्चों की देख–रेख, बाजार का काम, पशुओं की देख–रेख, कृषि कार्य, जैसे बहुत से काम होते हैं।

बच्चे अपने आस–पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। कभी देखकर, कभी अनुसरण कर, कभी बोलकर, कभी सुनकर, कभी अभ्यास कर तो कभी उपयोग कर आदि। कई तरीकों से बच्चे सीखते रहते हैं। लोगों से अंतःक्रिया कर अपने अनुभवों के आधार पर वह समझदारी हासिल करते हैं। सीखने की यह प्रक्रिया उनके व्यवहार में परिवर्तन के पूर्व होती है। इसलिए कहते हैं 'सीखना' बार–बार अभ्यास का परिणाम है।

आज COVID-19 महामारी की स्थिति के कारण, घर पर लंबे समय तक रह गए बच्चों की रुचि और उनकी मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इन सामग्रियों को तैयार करने की कोशिश की गई है। बच्चों को मौजूदा हालातों में खुश रहने, खेलने–कूदने के साथ–साथ पढाई में भी रूचि पैदा करने के लिए यह एक जरिया बन सकता है।

आइये, देखते हैं सीखने के लिए क्या–क्या जरूरी है :–

- बच्चे उस वातावरण में बेहतर सीखते हैं जब उन्हें लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं।
- बच्चे सक्रिय भागीदारी से सीखते हैं।
- बच्चे स्वयं प्रयोग करते हुए सीखते हैं।
- बच्चे बातचीत, अंतःक्रिया और विवेचना से सीखते हैं।
- बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं।
- बच्चे पूर्वज्ञान के साथ जोड़कर सीखते हैं।
- बच्चे सवाल पूछ कर, जाँच–परख कर सीखते हैं।

हम सभी जानते है कि सीखना अपने आप में एक सक्रिय व् सामाजिक गतिविधि है। कैसे सीखना है, यह भी एक सीख है (Learning to Learn) बच्चे सीखने के क्रम में तब सीखेंगे जब :–

- बच्चे चिंतनशील बनेंगे।
- बच्चे खोजी प्रवृति के बनेंगे।
- बच्चे सृजनशील कार्य में रुचि लेंगे।
- नए कार्यों को करके आजमाएंगे।
- जोड़–तोड़ कर समस्या का हल निकालना सीखेंगे।
- अपनी गलतियाँ खुद सुधारेंगे।
- गलती के डर से पहल नहीं करना, जैसी मानसिकता से उभरेंगे।
- असफलताओं से ही सफलता की कहानी लिखी जाती है, यह जानेंगे।

होम बेस्ड लर्निंग, शिक्षकों को भी स्कूल के बच्चों के संरक्षक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करेगा ताकि वे बेहतर सीख के साथ कल जब स्कूल खुलेंगे तब अपना कक्षा विनिमयन कर सकेंगे। इसी प्रकार माता–पिता और अभिभावक भी होम बेस्ड लर्निंग की अवधारणा को बच्चों की आवश्यकता और आकांक्षाओं से जोड़ कर देख सकेंगे। उम्मीद है कि वे बच्चों को घरों में एक बेहतर 'सीखने का माहौल' देने में सक्षम होंगे जिससे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बच्चों का एक अच्छा तालमेल बना रहे।

हम देखेंगे कि–

- ➡ इस खेल में लगभग सभी खिलाड़ी की सहभागिता रहती है।
- ➡ सबों को आनंद आता है।
- ➡ मानसिक क्रिया, यथा–वर्गीकरण, छाँटना, सोचना, चलती रहती है।
- ➡ सकारात्मक स्पर्धा का भाव बना रहता है।
- ➡ प्रश्न पूछने की कुशलता बढ़ती है।

प्रश्नोतर

1. वह कौन सी चीज है जो आपके रसोईघर में खेतों से आती है?
2. रसोईघर में दुकान से लायी जाने वाले पांच चीजों के नाम बताएं।
3. आपके रसोईघर की कौन सी चीज सबसे मंहगी है?
4. कौन सी ऐसी चीज है जिसका बहुत कम इस्तेमाल होता है?
5. रसोईघर की कौन सी ऐसी चीज है जो महीनों तक चलती है, और खराब नही होती हैं?
6. उन चीजों का नाम बताएँ जिसे 2–4 दिनों में इस्तेमाल न करें तो खराब हो जायेंगी?
7. रसोईघर में क्या करना और क्या नही करना चाहिए? बताएं।
8. अपने रसोईघर का एक चित्र बनाकर सभी चीजों को दर्शाएँ।
9. पुराने जमाने में ईधंन के रुप में किन–किन चीजों का उपयोग किया जाता था और आज किन–किन चीजों का उपयोग किया जाता है? क्यों?

खेल : बूझो तो जानें

- खिलाड़ियों को दो समूह में बाँट दें।
- कमरे के बीच फर्श पर एक अखबार फैला देंगे। सभी खिलाड़ियों को अखबार पर सब्जियों को रखने के लिए कहा जाएगा जैसे– आलू, टमाटर, भिड़ी आदि।
- अब एक समूह के एक खिलाड़ी उन सब्जियों में से कोई एक अपने मन में रखेंगे।
- दूसरे समूह के खिलाड़ी उनसे अधिकतम 3 प्रश्न कर सकेंगे, जिनका उत्तर वह खिलाड़ी 'हाँ' या 'नहीं' में देंगे। इन प्रश्नों के द्वारा उनके मन में रखी गई वस्तु की पहचान की जाएगी।
- यदि दूसरे समूह के खिलाड़ी 3 प्रश्न पूछकर सब्जियों की पहचान करते है तो उस समूह को 1 अंक मिलेंगे।
- अब दूसरे समूह का एक खिलाड़ी उन सब्जियों में से कोई एक अपने मन में रखेंगे और उपरोक्त प्रक्रिया दुहराई जाएगी।
- इस प्रकार यह खेल कई चक्र चलेगा।

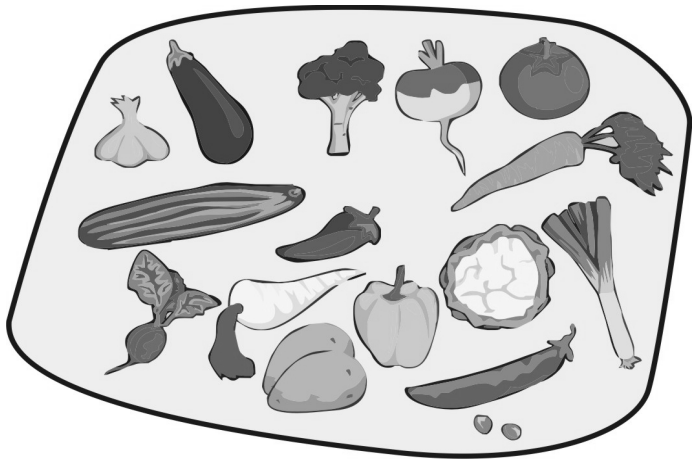

आइये जानिए अपने रसोईघर को

हमें पता है कि रसोईघर में भोजन पकाया जाता है। यहाँ कई तरह की चीजें दिखाई पड़ती है, जैसे– चावल, दाल, आटा, मैदा, सूजी, चना, मटर, मसालों के पैकेट, सरसों, धनिया, तेल, नमक के अलावे तरह–तरह की सब्जियाँ। दूसरी ओर हम देखें तो भोजन पकाने के काम में आनेवाली चीजें जैसे– चूल्हा, चौकी, बेलन, बैठी, चाकू, बाल्टी, डब्बा, थैला, पैकेट, चम्मच, कलछुल एवं तरह–तरह के बरतन भी दिखाई पड़ती हैं। आइये, आज हम इन्ही विषयों के इर्द–गिर्द रहकर अपनी बातचीत करेंगे। बातचीत के साथ–साथ कुछ काम भी करेंगे जिससे आप के अंदर विषयवस्तु की समझ बढ़ेगी और नये कौशल से आप समृद्ध होगें।

गीत/कविता

रसोईघर

चौके में लग गई आग हो,
सारे बरतन निकले भाग,
बाल्टी भागी बन, बन, बन
थाली भागी धन, धन, धन
लोटा भागा लन, लन, लन
अरे, चौके में लग गई आग हो
सारे बरतन निकले भाग

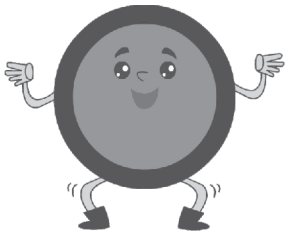

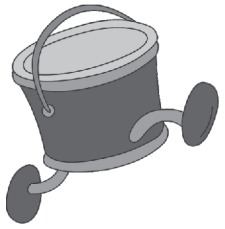

आलू का पराठा

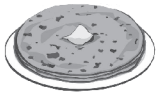

देख पराठा आलू का,

मन ललचाया भालू का।

बोला हम भी खायेंगे,

कुछ घर पर ले जायेंगे।

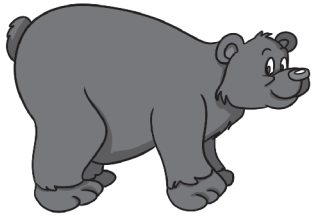

कहे लोमड़ी ना ना ना,

ये घर पर ले जाना ना।

इतने सेंक न पाऊँगी,

खुद भूखी रह जाऊँगी।

पकौड़ी गीत

आलू की पकौड़ी, दही के बड़े

मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े।

मूंग की मंगौड़ी, कलमी बड़े

मंगू की छत पर दो बंदर लड़े।

खस्ता कचौड़ी, कांजी के बड़े

गप्पू जो फिसले तो उल्टे पड़े।

लताओं से?	पेड़–पौधों से	जमीन के अंदर से

जानवर का नाम	पालतू या जंगली	क्या खाते है?	शाकाहारी या मांसाहारी

गाँव से बाजार में बिकने ले जाया जाता है।	शहर से खरीदकर गाँव के बाजार में बेचा जाता है।

खेल

चित्र मे दिखाई देने वाली चीजों के नाम लिखिये :–

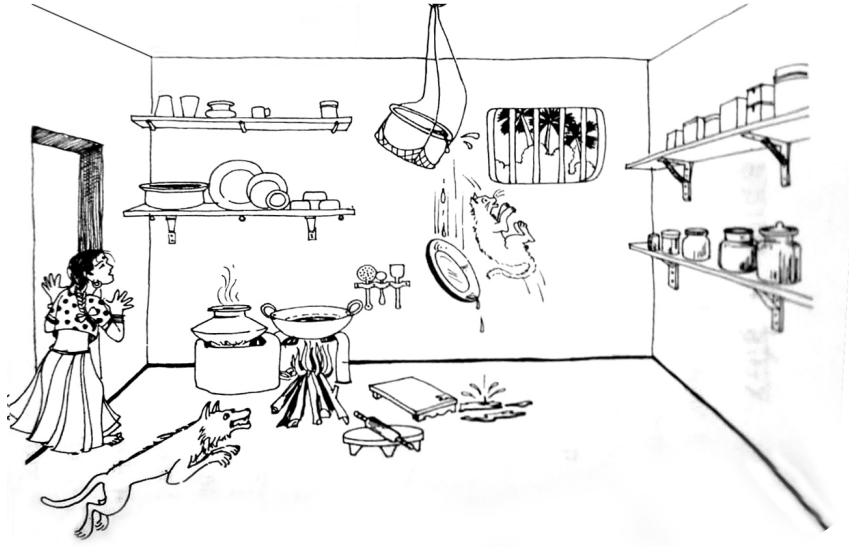

रंध्र, होते हैं। इन रंध्रों से मिट्टी के बरतनों में भरा पानी रिस–रिसकर बरतनों की ऊपरी सतह पर आता रहता है और वाष्पीकृत होता रहता है। इस वाष्पीकरण की क्रिया के लिए ऊष्मा की आवश्यकता होती है। इस ऊष्मा की पूर्ति आसपास की वस्तुओं से होती है। जब मिट्टी के बरतनों से वाष्पीकरण होता है तो बरतन ठढ़ा हो जाता है जिससे पानी भी ठढ़ा रहता है। जहाँ वाष्पीकरण होता है वहाँ शीतलीकरण होता है।

खान-पान के बदलते तरीके

1. अन्न, दलहन, तेलहन, सब्जी तथा फलों के बीच के संबंधों को समझे।
2. विभिन्न मौसमों में जो खाते हैं उसकी सूची बनायें।
3. क्या मौसम के बदलाव से भोजन में बदलाव आता है?
4. क्या इसका कारण मौसम की मजबूरी या उस मौसम में उसका खाना लाभप्रद?
5. औद्योगिकरण के पश्चात् हमारे खान–पान में परिवर्तन आया है? आज हम फलों और सब्जियों को छोड़कर उद्योगों में तैयार डिब्बा–बंद भोज्य पदार्थ खाने लगे हैं।
6. यह परिस्थिति क्या दर्शाता है? प्रस्तुति दें।

आओ सूची तैयार करेंः-

पकाकर खायी जाने वाली चीजें	कच्ची खायी जाने वाली चीजें	दोनों तरह से खायी जाने वाली चीजें

रसोईघर

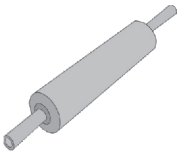

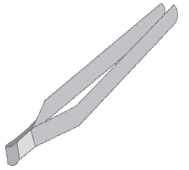

यह है मेरा रसोईघर।।
चूल्हा, चौकी, चाकू बेलन
आटा, दाल और बड़े–बड़े बर्त्तन
नमक, सरसों, घी और तेल
सब आपस में है बेमेल
यह है मेरा रसोईघर ।।
माँ, बहन, भाई और पापा
काका–काकी नानी–दादा
सब मिलकर करते हैं भोजन
हँसते–खेलते लग जाता मन
यह है मेरा रसाईघर।।

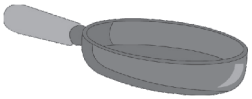

पहेली

1. पहले आता धुँआ और आँखों में पानी
   अब न आता धुँआ और न आता पानी
   क्या हूँ मैं यह बतलाओ मेरी नानी। (गैस)

---

2. रगड़ो तो जल जाता हूँ,
   फूँको तो बुझ जाता हूँ
   दीपक, बत्ती को जलाता हूँ।
   साथ हमसब मिलकर रहते
   बताओ तो मुझे क्या कहते। (माचिस)

पहेली

3. काट–छाँट करना मेरा काम
बताओ तो क्या है मेरा नाम। (चाकू)

---

4. जालीदार हूँ पहरेदार हूँ
देखता आर–पार हूँ
तरल को मैं रोकता नहीं
ठोस (बड़ा) को मैं छोड़ता नहीं। (चाय छलनी)

---

5. गर्म को उठाता हूँ
बाकी समय पड़ा रहता हूँ
लोहे से मैं हूँ बना
नाम तो जल्दी बता देना। (चिमटा)

---

6. संसार का है वह दुसरा नाम
पानी रखने में आता है काम
उल्टा पढ़ो तो हाथी का नाम
बताओ तो क्या है वह नाम। (जग)

---

7. छिलके दूर हटाते जाओ,
बड़े मजें से खाते जाओ।
इतना पर जरुर देखना,
छिलके इसके दूर फेंकना। (केला)

---

8. हरी गेंद पर गोल नहीं है,
फिर भी वह बेडोल नहीं है।
पकने पर हो जाती पीली,
थी खट्टी अब बड़ी रसीली। (आम)

के कम होने पर द्रव का क्वथनांक भी कम हो जाता है। प्रेशर कुकर में किसी वस्तु को पकाने के लिए पानी के साथ रखकर ढक्कन लगा दिया जाता है। प्रेशर कुकर में भी द्रव के क्वथनांक का नियम काम करता है। गर्म करने से कुकर में पानी की भाप बनती है, उस भाप के कारण कुकर में दबाव बढ़ता रहता है। जैसे–जैसे दबाव बढ़ता है, पानी का क्वथनांक 100 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर 130 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। दाब बढ़ने पर ताप भी बढ़ता है। यही कारण है कि कुकर में खाना जल्दी पक जाता है।

माइक्रोवेव में खाना जल्दी क्यों पकता है?

आधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग से हमारा जीवन अधिक आरामदायक हो गया है। आधुनिक उपकरण में माइक्रोवेव का अपना स्थान है। क्या इसी प्रकार दबाव

इसी प्रकार दबाव के कम होने पर द्रव का क्वथनांक भी कम हो जाता है। प्रेशर कुकर में किसी वस्तु को पकाने के लिए पानी के साथ रखकर ढक्कन लगा दिया जाता है। प्रेशर कुकर में भी द्रव के क्वथनांक का नियम काम करता है। गर्म करने से कुकर में पानी की भाप बनती है, उस भाप के कारण कुकर में दबाव बढ़ता रहता है। जैसे–जैसे दबाव बढ़ता है, पानी का क्वथनांक 100 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर 130 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। दाब बढ़ने पर ताप भी बढ़ता है। यही कारण है कि कुकर में खाना जल्दी पक जाता है।

धातुओं के बरतनों की अपेक्षा मिट्टी के बरतनों में पानी अधिक ठंडा क्यों होता है?

धातुओं के बरतन में रंध्र नहीं होते जबकि मिट्टी के बरतनों में छोटे–छोटे छिद्र या

''नहीं।'' बर्तनों ने कहा– ''जब मदद ही नहीं कर सकते तो राजा कैसे बन सकते हो?'' सिलिंडर बोला– ''अच्छा तो ये बताओ रसोईघर में राजा कौन बनेगा?'' इस पर बर्तन ने उत्तर दिया– ''रसोईघर में कोई राजा नहीं होता है, क्योंकि किसी दूसरे की रक्षा तो दूर की बात है, वह अपनी सुरक्षा भी नहीं कर सकता। इसलिए रसोईघर के बर्तनों में राजा नहीं होता। यहाँ प्रजातंत्र की भाँति बर्तन तंत्र है और हम सब किचेन–किंग हैं।'' जोरदार हँसी के साथ सब फिर से नाचने–गाने लगे और अपना–अपना काम करने लगे।

साभार–
किलकारी, बिहार

करके सीखें

प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों बनता है?

प्रेशर कुकर रसोई में इस्तेमाल होने वाला एक ऐसा आधुनिक उपकरण है, जिसमें प्रायः सभी प्रकार का खाना थोड़ी ही देर में पक जाता है। इससे समय की बचत के साथ–साथ ईंधन की भी बचत हो जाती है। क्या आप जानते है कि प्रेशर कुकर में भोजन जल्दी कैसे पक जाता है? एक निश्चित वायुमण्डलीय दबाव पर हर द्रव पदार्थ के उबलने का एक निश्चित तापमान होता है। सामान्य वायुमण्डलीय दबाव पर इस तापमान को उस द्रव का क्वथनांक कहते हैं। लगातार गर्म करने पर सभी द्रव पदार्थ उबलने लगते हैं।

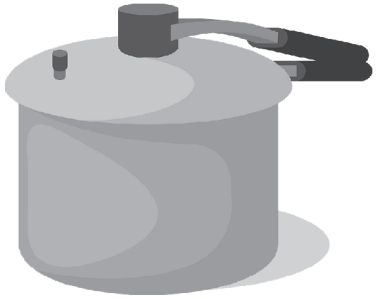

सामान्य दबाव पर पानी 100 डिग्री सेल्सियस तापमान पर उबलता है। द्रव पदार्थ की सतह पर दबाव बढ़ाने से उसका क्वथ्नांक भी बढ़ जाता है। इसी प्रकार दबाव

कहानी

रसोईघर

बात पिछले दिनों की है जब मेरे रसोईघर से लकड़ी–कोयला चूल्हा का अंतिम दिन था। उसी दिन सरकार से मिले नये गैस चूल्हे का मेरे घर में आगमन हुआ था। रसोईघर के किनारे पड़े लकड़ी, कोयला घूर–घूर कर गैस

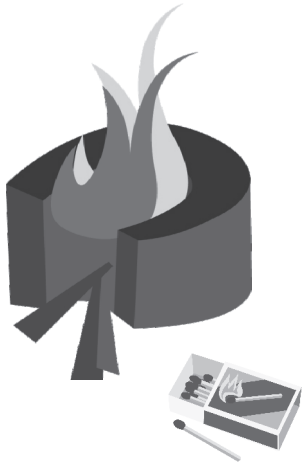

सिलिण्डर को देख रहे थे और मन ही मन गुस्से में थे। शायद यह कह रहे थे कि बड़ा आया मोटा सा, लोहा का बना, वह भी लाल–लाल, पता नही करेगा क्या? हमलोगों ने वर्षो से घर के रसोईघर को जिन्दा रखा। आँधी, तूफान, जाड़ा, गर्मी, शादी विवाह हर समय हम इनके काम आये। आज एक नई दुल्हन बनकर आई यह गैस सिलिण्डर तो देखने मे ही सुदंर है। सुना है गलत इस्तेमाल से यह धमाका भी कर देती हैं। कई बार इसके अंदर की गैस खत्म होने पर आसानी से नहीं मिलती है। सिर्फ देखने में यह मोटा–तगड़ा लगता है'', यह सब चुपचाप सुन रहा था किनारे पड़ा माचिस का डिब्बा। वह बोला मैं हर एक घर का सेवक हूँ। मुझे सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करना है। इतने में लकड़ी, कोयला बोली–माचिस बाबा, अब तुम्हारा समय भी खत्म, क्यों कि मालकिन ने लाईटर नाम की कोई चीज लाई है। अब तुम्हारी जरूरत नही पड़ेगी। इतने में घर के सभी लोग पुरानी चीजों को बाहर निकालने लगे और

उनकी जगह गैस और लाईटर ने ले ली इस दृश्य को आज भी कोयला और लकड़ी भूला नही पाई है। वे माचिस बाबा के साथ बाहर की कोठरी में रहने लगे। वक्त बदल गया है, लोग बदल गये हैं। लेकिन हमारी याद सबको जरूर आयेगी।

रसोई का राजा कौन?

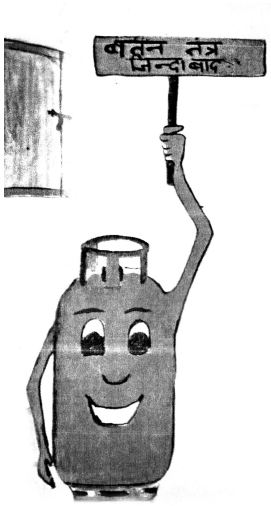

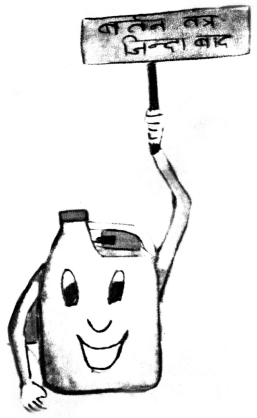

एक बार सिलिंडर और माचिस में मुठभेड़ हो गई। सिलिंडर बोला–''मैं अपनी गैस छोड़ दूँ और कहीं चिंगारी आ जाए तो तुम भस्म हो जाओगे।'' इस पर माचिस बोली–''मैं तुम्हारी टोपी खोलकर चिंगारी दे दूँगी, तुम ब्लास्ट हो जाओगे।'' सिलिंडर बोला–''तुम्हारे पैर थोड़े ही लगे हैं, तुम कैसे आओगी? मेरी गैस तो वायु की सहायता से आगे बढ़ती है।'' फिर इसी बीच माचिस के पड़ोस में रहने वाला मिट्टी का तेल भी आ गया और बोला–'' अरे बेवकूफ सिलिंडर! तू बड़ा मुर्ख है। मैं किस लिए हूँ। मैं बिखर जाऊँगा माचिस मुझ पर चिंगारी फेंकेगी और मैं तुझे ब्लास्ट कर दूँगा।'' इसी बीच कलकल करता पानी आया और बोला–''तूने यह कैसे समझ लिया कि सिलिंडर अकेला है, अगर तू इसे जलाने जाएगा तो मैं बीच में ही तुझे बुझा डालूँगा।'' इसी बीच हँसता–खिलखिलाता तवा आया और बोला–'' पानी भइया, इस माचिस को तो बुझा ही दो, जानते हो इसी ने तो मुझे काला बना दिया। रोज मुझे दाह दिखाता है और इस तरह मैं काला बन गया। पहले

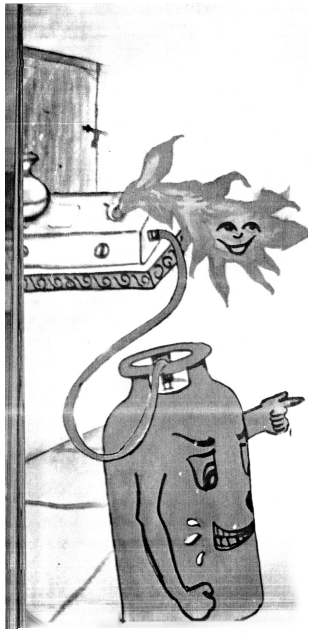

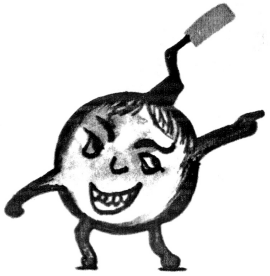

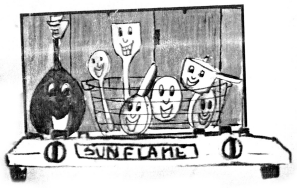

मैं कितना गोरा था, अब कूकर मुझे हमेशा चिढ़ाता है बोलता है, काला कलूटा, बैंगन लूटा। हाँ भइया, पर यह मत सोचना कि मैं उसे छोड़ देता हूँ। मैं भी उसे कहता हूँ–काला हूँ तो क्या हुआ? फिर भी तो मुझे देखकर तुम सिटी बजाया ही करते हो।'' यह बात सुनकर सारे बर्तन खूब हँसे पर इनकी मुठभेड़ खत्म नहीं हुई। सारे बर्तनों को यह अच्छा नहीं लग रहा था। सभी बर्तन एक साथ बोले सिलिंडर, पानी, मिट्टी का तेल और माचिस, तुम सब मुठभेड़ क्यों कर रहे हो। ''माचिस बोली–शुरुआत तो सिलिंडर ने ही की। सिलिंडर बोला कि सारे जानवर पशु, पक्षी, मनुष्य जाति सभी का एक–एक राजा होता है जो कि सगसे बलशाली और बुद्धिमान होता है, इसीलिए वही राजा होता है। सारे बर्तनों में मैं बहुत शक्तिशाली हूँ अतः मुझे राजा होना चाहिए।'' इस बात पर बर्तनों ने कहा– ''राजा का एक और कर्तव्य होता है।'' सिलिंडर ने पूछा' '' क्या कर्तव्य होता है?'' बर्तन ने जबाब दिया– '' सभी की रक्षा करना। क्या तुम ऐसा कर सकते हो? अगर काँच का ग्लास टूट जाए तो तुम मदद कर सकते हो?'' सिलिंडर बोला– '' मेरे हाथ–पाँव नहीं हैं, वरना मैं जरुर मदद करता।'' बर्तन ने कहा– ''हाथ–पाँव छोड़ो, तुम मदद कर सकते हो या नहीं?'' सिलिंडर ने उत्तर दिया–